अध्याय-11

वाक्य-विचार

वक्ता के अर्थ को पूर्ण रुप से स्पष्ट करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।

भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है वर्ण और वर्णों के सार्थक समूह से शब्द निर्मित होते हैं व शब्दों के सार्थक समूह से वाक्य। अर्थात अगर शब्दों के सार्थक क्रम को बदल दिया जाए तो वक्ता का अभिप्राय स्पष्ट नहीं हो सकेगा–

जैसे–विभा छत के ऊपर खड़ी है।

क्रम बदलने पर–छत है विभा के ऊपर खड़ी।

इस प्रकार–शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

अर्थ के सम्प्रेषण की दृष्टि से भाषा की पूर्ण इकाई वाक्य है। संरचना की दृष्टि से पदों का सार्थक समूह ही वाक्य है।

वाक्य के अंग

मुख्यत: वाक्य के दो अंग होते हैं–

1. उद्देश्य 2. विधेय

1. उद्देश्य–वाक्य में जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं। वाक्य में कर्ता ही उद्देश्य होता है।

यथा–1. दादाजी ने पूजा की। 2. लड़के खेल रहे हैं।

इन वाक्यों में दादाजी व लड़कों के बारे में बताया जा रहा है अर्थात ये दोनों उद्देश्य हैं।

2. विधेय–उद्देश्य अर्थात कर्ता के सम्बन्ध में वाक्य में जो कुछ भी कहा जाता है वह विधेय होता है।

यथा–1. मोर नाच रहा है। 2. बालक दूध पी रहा है।

वाक्य भेद

क्रिया, अर्थ तथा रचना के आधार पर वाक्यों के अनेक भेद व उनके प्रभेद किए गए हैं।

1. क्रिया के आधार पर–क्रिया के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

(अ) कर्त्तृवाच्य–जब वाक्य में क्रिया का सम्बन्ध सीधा कर्ता से होता है व क्रिया के लिंग, वचन कर्ता कारक के अनुसार प्रयोग होते हैं उसे कर्त्तृवाच्य वाक्य कहते हैं।

जैसे– सीता गाना गा रही है।
अनुष्क गाना गा रहा है।

(ब) कर्मवाच्य–जब वाक्य में क्रिया का सम्बन्ध कर्म से होता है अर्थात क्रिया के लिंग, वचन, कर्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार होते हैं, उसे कर्मवाच्य वाक्य कहा जाता है।

जैसे– श्रेया ने खेल खेला।

अयन ने खेल खेला।

(स) भाववाच्य–जब वाक्य में क्रिया, कर्ता व कर्म के अनुसार प्रयुक्त न होकर भाव के अनुसार होती है तो उसे भाववाच्य वाक्य कहते हैं।

जैसे– शगुन से पढ़ा नहीं जाता।

अक्षता से पढ़ा नहीं जाता।

2. अर्थ के आधार पर–अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–

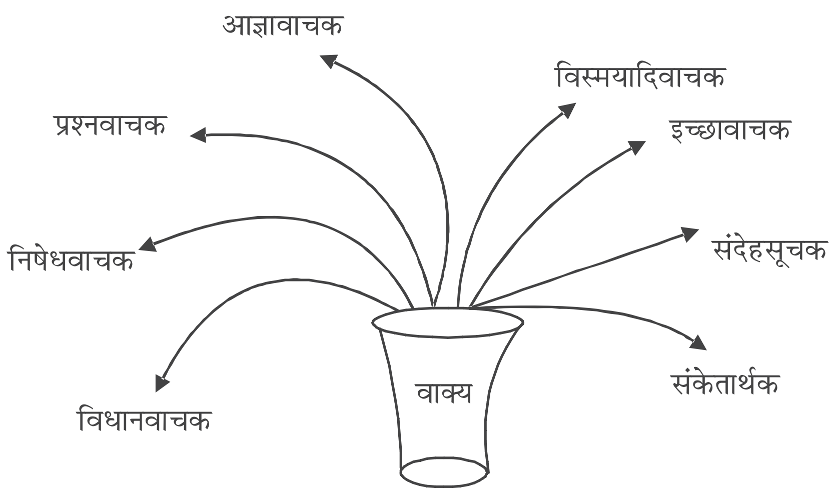

(1) विधानवाचक वाक्य–जिस वाक्य में किसी काम या बात का होना पाया जाता है, वह विधानवाचक वाक्य कहलाता है।

जैसे– मैं खाता हूँ (काम का होना)।

शगुन मेरी सहेली है (बात का होना)।

(2) निषेधात्मक वाक्य–जिस वाक्य में किसी बात के न होने या काम के अभाव या नहीं होने का बोध हो, वह निषेधात्मक वाक्य कहलाता है।

जैसे– सड़क पर मत भागो।

अनुष्क घर पर नहीं है।

(3) प्रश्नवाचक/प्रश्नार्थक वाक्य–प्रश्न का बोध कराने वाला वाक्य अर्थात जिस वाक्य का प्रयोग प्रश्न पूछने में किया जाए उसे प्रश्नार्थक वाक्य कहते हैं।

जैसे– आप कहाँ जा रहे हैं?

तुम क्या खेल रहे हो?

(4) आज्ञावाचक वाक्य–जिस वाक्य में आज्ञा, अनुमति, उपदेश व विनय का बोध हो, वह आज्ञार्थक/आज्ञावाचक वाक्य कहलाता है।

जैसे– अनुष्क अपना कमरा साफ करो। (आज्ञा)

अयन इस कुरसी पर बैठो।

(5) विस्मयादिबोधक वाक्य–जिस वाक्य में हर्ष, शोक, घृणा व विस्मय आदि भाव प्रकट होते है, वह विस्मयादिबोधक वाक्य कहलाता है।

जैसे– अरे! यह क्या हो गया।

वाह! कितना सुन्दर दृश्य है।

(6) इच्छावाचक/इच्छार्थक वाक्य–जिस वाक्य में किसी आशीर्वाद, इच्छा कामना का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे– ईश्वर सबका भला करें। (इच्छा)

आपका जीवन सुखमय हो।

(7) सन्देहसूचक/संदेहवाचक वाक्य–जिस वाक्य में किसी काम के पूरा होने में संदेह या संभावना का भाव प्रकट हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते है।

जैसे– शायद वे कल आएँ।

हो सकता है कल तक मौसम ठीक हो जाएगा।

(8) संकेतार्थक वाक्य–जिस वाक्य में संकेत या शर्त हो वह संकेतार्थक वाक्य कहलाता है।

जैसे– यदि तुम आओ तो मैं चलूँ।

वर्षा न होती तो, फसल सूख जाती।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं।

(i) सरल वाक्य

(ii) मिश्र या मिश्रित वाक्य

(iii) संयुक्त वाक्य

(i) सरल वाक्य–जिस वाक्य में एक उद्देश्य व एक ही विधेय होता है। उसे साधारण सरल वाक्य कहते हैं। अर्थात एक कर्ता व एक ही क्रिया होती है।

जैसे– मै जाता हूँ।

(ii) मिश्र वाक्य/मिश्रितवाक्य–जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य हो तथा उसके साथ अन्य आश्रित उपवाक्य हों उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। मिश्र वाक्य व उप वाक्यों को जोड़ने का काम समुच्चयबोधक अव्यय करते हैं ये योजक (चूँकि, क्योंकि, जब, तब, अर्थात, यदि, तो, ताकि, तदापि) होते हैं।

जैसे– वे मेरे घर आएँगे, क्योंकि उन्हें अजमेर शहर घूमना है।

वे मेरे घर आएँगे (प्रधान वाक्य)

क्योंकि (योजक)

उन्हें अजमेर शहर घूमना है। (आश्रित उप वाक्य)

(i) प्रधान उप वाक्य–जो वाक्य मुख्य उद्देश्य व मुख्य विधेय से बना हो उसे प्रधान उप वाक्य

कहते हैं।

(ii) आश्रित उप वाक्य

वाक्य से छोटी इकाई उप वाक्य होती है अर्थात जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के आश्रित रहता है उसे आश्रित उपवाक्य कहते हैं।

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

1. संज्ञा उपवाक्य
2. विशेषण उपवाक्य
3. क्रिया विशेषण उपवाक्य

1. संज्ञा उपवाक्य–ऐसे उपवाक्य जो वाक्य में संज्ञा की तरह काम करें अर्थात् किसी कर्त्ता, कर्म तथा पूरक का काम देते हैं वे संज्ञा उपवाक्य कहलाते हैं। इस वाक्य में प्राय:, कि, का प्रयोग होता है।

जैसे– मैंने देखा कि शगुन गा रही है।

संज्ञा उपवाक्य में प्राय: 'कि' का लोप भी हो जाता है–

मैंने सुना है वे कल आएँगे।

कर्म–मैं कहता हूँ कि वह गया। 'वह गया' 'कहता हूँ' का कर्म है।

पूरक–उनकी इच्छा है कि मैं खाना खाऊँ। 'कि मैं खाना खाऊँ' 'है' क्रिया का पूरक है।

2. विशेषण उपवाक्य–वे उपवाक्य जो प्रधान वाक्य में कर्ता अथवा कर्म या संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण आश्रित उपवाक्य कहते हैं। विशेषण उपवाक्य का प्रारम्भ प्राय: जो, जिसकी, जिसका, जिसके आदि शब्दों से होता है।

जैसे– जिससे आपको काम था, वह व्यक्ति चला गया।

3. क्रिया विशेषण उपवाक्य–जो प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताते हैं वे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहलाते हैं। ये क्रिया के घटित होने का स्थान, दिशा, कारण, परिणाम, रीति आदि की सूचना देते हैं।

जैसे– यदि दिनभर खेलोगे तो कब पढ़ोगे।

क्रिया विशेषण उपवाक्य कि, क्योंकि, जो, यदि, तो, अगर, यद्यपि, इसलिए, भी, इतना आदि अव्यय पदों द्वारा अन्य वाक्यों से मिलाते हैं।

(iii) संयुक्त वाक्य - जिस वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य या प्रधान उप वाक्य या समानाधिकरण उपवाक्य किसी संयोजक शब्द (तथा, एवं, या, अथवा, और, परन्तु, लेकिन, किन्तु, बल्कि, अत: आदि) से जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं जैसे भरत आया किन्तु भूपेन्द्र चला गया।

(समानाधिकरण वाक्य- ऐसे उपवाक्य जो प्रधान उपवाक्य या आश्रित उपवाक्य के समान अधिकार वाले हों उन्हें समानाधिकरण उप वाक्य कहते हैं।)

वाक्य विश्लेषण

रचना के आधार पर निर्मित वाक्यों को उनके अंगों सहित अलग कर उनका परस्पर सम्बन्ध बताना वाक्य विश्लेषण या वाक्य विग्रह कहलाता है।

1. सरल वाक्य का विश्लेषण–सरल वाक्य के वाक्य विश्लेषण में सर्वप्रथम वाक्य के दो अंग उद्देश्य व विधेय को बताना होता है उसके बाद उद्देश्य के अंग कर्त्ता व कर्त्ता का विस्तार तथा विधेय के अन्तर्गत कर्म व कर्म का विस्तारक, पूरक, पूरक का विस्तारक जो भी हो उनका उल्लेख करना होता है।

जैसे– (क) सभी मित्र दिल्ली का लाल किला देखने चले गए।

(ख) मेरी बहन श्रेया कहानियों की पुस्तकें बहुत पढ़ती है।

उद्देश्य		विधेय					
कर्ता	कर्ता का विस्तारक	कर्म	कर्म का विस्तारक	पूरक	पूरक का विस्तारक	क्रिया	क्रिया का विस्तारक
(क) मित्र	सभी	लालकिला	दिल्ली का	–	–	देखने चले गए	–
(ख) श्रेया	मेरी बहन	पुस्तकें	कहानियों	–	–	पढ़ती है	बहुत

(ग) जयपुर का सिटी पैलेस दर्शनीय स्थल है।

उद्देश्य		विधेय					
कर्ता	कर्ता का विस्तारक	कर्म	कर्म का विस्तारक	पूरक	पूरक का विस्तारक	क्रिया	क्रिया का विस्तारक
सिटी पैलेस	जयपुर का	–	–	स्थल	दर्शनीय	है	–

2. मिश्रित वाक्य या मिश्रवाक्य का विश्लेषण–मिश्रित या मिश्र वाक्य के विश्लेषण में उसके प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य एवं उसके प्रकार का उल्लेख किया जाता है।

जैसे– (क) मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं राष्ट्रपति बनूँ।

(ख) प्रांशु कल कॉलेज नहीं गया क्योंकि वह बीमार था।

उपवाक्य	वाक्य भेद	कार्य	योजक	कर्ता	कर्ता का विस्तार	क्रिया	कर्म	पूरक	पूरक विस्तार
(क) मेरे जीवन का लक्ष्य है	प्रधान उपवाक्य	–	–	जीवन का	–	है	लक्ष्य	–	–
मैं राष्ट्रपति बनूँ	आश्रित संज्ञा उपवाक्य	प्रधान उपवाक्य की क्रिया का कर्म	कि	मैं	बनूँ	–	राष्ट्रपति	–	–
(ख) प्रांशु कल कॉलेज नहीं गया	प्रधान उपवाक्य	–	–	प्रांशु	–	नहीं गया	–	–	कल कॉलेज
वह बीमार था	आश्रित क्रिया विशेषण	–	क्योंकि	वह (उसे)	–	था	–	बुखार	–

उपवाक्य

3. संयुक्त वाक्य का विश्लेषण–संयुक्त वाक्य के विश्लेषण में समानाधिकरण उपवाक्यों या साधारण वाक्यों के उल्लेख के साथ उन्हें जोड़ने वाले योजक शब्द का भी उल्लेख करना होता है।

जैसे– 1. अनुष्क ने पुस्तक पढ़ी और सो गया।

2. सबने आपकी बहुत प्रतीक्षा की पर आप नहीं आए।

उपवाक्य	उपवाक्य	योजक	कर्ता	कर्ता का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तारक	विधेय
1. अनुष्क ने पुस्तक पढ़ी	प्रधान उपवाक्य	–	अनुष्क	–	पढ़ी	–	पुस्तक	–	–
सो गया	समानाधिकरण उपवाक्य	और	वह (लुप्त)	–	सो गया	–	–	–	–
2. सबने प्रतीक्षा	प्रधान उपवाक्य	–	सबने	–	प्रतीक्षा की	–	आपकी	–	बहुत
प्रतीक्षा की	समानाधिकरण	पर	–	–	आए	नहीं	आप	–	–

वाक्य संश्लेषण

वाक्य विश्लेषण में वाक्य में आए उपवाक्यों को अलग किया जाता है लेकिन वाक्य संश्लेषण में अलग-अलग वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बना दिया जाता है।

कालांश लगा। गुरुजी आए। कक्षा में पढ़ाया। दूसरी कक्षा में चले गए।

वाक्य संश्लेषण में इन चार वाक्यों से एक बनाया जाता है–

उदाहरण 1

1. कालांश लगते ही गुरुजी एक कक्षा में पढ़ाकर दूसरी कक्षा में चले गए। (सरल वाक्य)
2. कालांश लगते ही गुरुजी कक्षा में आए और पढ़ाकर दूसरी कक्षा में चले गए। (संयुक्त वाक्य)
3. कालांश लगा ही था कि गुरुजी कक्षा में पढ़ाने आए, फिर दूसरी कक्षा में चले गए। (मिश्रित वाक्य)

उदाहरण 2

1. हमारे घर से बाहर निकलते ही आसमान में बादल छाने लगे। (सरल वाक्य)
2. हम घर से बाहर निकले और आसमान में बादल छाने लगे। (संयुक्त वाक्य)
3. जैसे ही हम घर से बाहर निकले, आसमान में बादल छाने लगे। (मिश्रित वाक्य)

उदाहरण 3

1. बच्चे खेलने के लिए मैदान में गए थे। (सरल वाक्य)
2. बच्चों को खेलना था अत: मैदान में गए थे। (संयुक्त वाक्य)
3. बच्चे मैदान में गए थे क्योंकि उन्हें खेलना था। (मिश्रित वाक्य)

वाक्य के आवश्यक तत्त्व

1. सार्थकता–वाक्य में हमेशा सार्थक शब्दों का ही प्रयोग होना चाहिए।

जैसे– मैं आप सबको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

2. पदक्रम–वाक्य का सही अर्थ ग्रहण करने के लिए एक निश्चित क्रम होना चाहिए यदि क्रम बदल जाता है तो कथन का अर्थ बदल जाता है।

जैसे– बच्चे को काटकर फल दो।

सही क्रम–फल काटकर बच्चे को दो।

3. निकटता–पदों के बीच अगर अन्तर रहता है तो वह अर्थ ग्रहण में बाधक रहता है। इसलिए वाक्य के पदों में परस्पर निकटता होना अनिवार्य है।

वाक्य में स्वाभाविक ठहराव की आवश्यकता होती है परन्तु प्रत्येक शब्द के बाद ठहरना या रुक रुककर बोलना अशुद्ध होता है।

जैसे– उसने........मेरा........गाना.........सुना। (उसने मेरा गाना सुना)

4. पूर्णता–वाक्य अपने आप में पूर्ण होना चाहिए इसमें शब्दों की कमी होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

जैसे– कमल पीता है।

शुद्ध– कमल दूध पीता है।

वाक्य में पद क्रम

वाक्य रचना में पदक्रम का विशेष महत्व होता है। अतः वाक्य रचना करते समय कर्ता, कर्म और क्रिया का क्रम ध्यान में रखना आवश्यक है। अतः इन नियमों को जानना आवश्यक है–

1. वाक्य में कर्ता और कर्म के बाद में क्रिया आती है।

जैसे– अनुष्क खाना खा रहा है।

2. कर्ता, कर्म तथा क्रिया के (विस्तारक) पूरक इनसे पूर्व में आते हैं।

जैसे– भूखा भिखारी स्वादिष्ट खाना जल्दी-जल्दी खा गया।

3. क्रिया विशेषण क्रिया से पहले प्रयोग में आती है।

जैसे– धावक तेज दौड़ता है।

4. पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले आती है।

जैसे– वह खाना खाकर सो गया।

5. सम्बोधन और विस्मयादिबोधक प्रायः वाक्य के आरम्भ में आते हैं।

जैसे– अनुष्क! इधर बैठो।

वाह! कितना सुन्दर महल है।

6. निषेधात्मक वाक्यों में 'न' अथवा 'नहीं' का प्रयोग प्रायः क्रिया से पहले किया जाता है।

जैसे– रमेश बाजार नहीं जाएगा।

7. सार्वजनिक विशेषण अन्य विशेषण से पूर्व आता है।

जैसे– मेरी छोटी बहिन।

8. पदवी या व्यवसाय सूचक शब्द नाम से पहले आते हैं।

जैसे– पं. रामसहाय, डॉ. अक्षत, प्रो. शगुन।

9. मिश्र या संयुक्त वाक्यों में योजक का प्रयोग दो उपवाक्य के बीच होता है।

जैसे– घर पर काम था इसलिए वह नहीं आया।

जब कार्य समाप्त हुआ तब वे घर चले गए।

10. मिश्र वाक्य की संरचना में प्रधानवाक्य आश्रित उप वाक्य के पहले आता है। जैसे– जो परिश्रम करता है, उसे सब पसन्द करते हैं।

वाक्य में क्रिया का अन्वय

वाक्य रचना में पदों के सम्बन्ध व क्रम का विशेष ध्यान रखा जाता है। पदों के इसी क्रम या सम्बन्ध को 'मेल या अन्वय' कहते हैं। अन्वय का अर्थ 'सम्बद्धता' है। अर्थात वाक्य में पदों का उचित मेल होना आवश्यक है–

कर्ता व क्रिया का अन्वय-

1. वाक्य में कर्ता के परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ हो तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होता है।

जैसे– राम गाना गाता है।

सीता गाना गाती है।

2. वाक्य में विभक्ति रहित एक ही लिंग, वचन, पुरुष के कर्ता हो तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी।

जैसे– अनुष्क, अमन, अक्षत खाना खा रहे हैं।

श्रेया, शगुन गाना गा रही हैं।

3. आदर का भाव प्रकट करने वाले एक वचन कर्ता के साथ भी क्रिया का बहुवचन में प्रयोग होता है।

जैसे– पिताजी कल आ रहे हैं।

भाई साहब खाना खा रहे हैं।

4. भिन्न लिंग, वचन के विभक्ति रहित एक वाक्य के कर्ता और, तथा आदि शब्दों से जुड़े हों तो क्रिया बहुवचन पुल्लिंग में होगी।

जैसे– अनुष्क व शगुन खेल रहे हैं।

5. हिन्दी में आँसू, हस्ताक्षर, प्राण, दर्शन, होश, भाग्य आदि शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।

जैसे– ये हस्ताक्षर मेरे हैं।

मेरी आँखों में आँसू आ गए।

कर्म और क्रिया का अन्वय–

1. यदि वाक्य में कर्ता विभक्ति सहित और कर्म विभक्ति रहित हो तो क्रिया का लिंग, वचन व पुरुष कर्म के अनुसार होंगे।

जैसे– श्रेया ने गाना गाया।

प्रांशु ने पुस्तक पढ़ी।

2. यदि कर्ता और कर्म दोनों के साथ विभक्ति हो तो क्रिया एकवचन पुल्लिंग व अन्य पुरुष होती है।

जैसे– राम ने चोर को पकड़ा।

अनुष्क ने अक्षत को देखा।

3. यदि कर्ता के साथ विभक्ति 'ने' लगा हो और वाक्य में दो कर्म हो तो क्रिया अन्तिम कर्म के अनुसार लगती है।

जैसे– अनुष्क ने पुस्तक और पेन्सिल खरीदी।

अमन ने मिठाई व फल खरीदे।

संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय–

1. अगर सर्वनाम का प्रयोग अनेक संज्ञाओं के स्थान पर हो तो वह बहुवचन में प्रयुक्त होता है।

जैसे– श्रेया, शगुन विद्यालय गई हैं, वे शाम को घर लौटेंगी।

2. एक संज्ञा के स्थान पर एक ही सर्वनाम का प्रयोग होना चाहिए।

जैसे– राम ने श्याम से कहा, तुम जाओ, लड़के तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।

3. जिस संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम प्रयुक्त हुआ है वचन उसी संज्ञा के अनुरूप होता है। जैसे- सीता ने कहा वह गाना गाएगी।

विशेषण व विशेष्य का अन्वय

1. अगर वाक्य में एक से अधिक विशेष्य हों तो विशेषण अपने निकट विशेष्य के अनुसार होगा।

जैसे– काली साड़ी, पीला कुर्ता लाओ।

पीला कुर्ता काली साड़ी लाओ।

2. आकारान्त विशेषण-विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार बदल जाते हैं।

जैसे– तुम काला कुर्ता पहनो।

तुम काली साड़ी पहनो।

किन्तु अन्य विशेषणों में विशेष्य के अनुरूप परिवर्तन नहीं होता है।

जैसे– नीली कमीज, नीली साड़ी

वाक्य रचना के शुद्ध रूप

भाषा में वाक्य शुद्धि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्य रचना में अशुद्धि होने के अनेक कारण हैं।

1. व्याकरण के नियमों का व लिंग वचन का ज्ञान न होना।

2. वाक्य में अनावश्यक शब्दों का प्रयोग।

3. पदों को सही क्रम में न रखना।

4. शब्दों के सही अर्थ की जानकारी नहीं होना।

5. सर्वनाम व परसर्ग सम्बन्धी अशुद्धि।

6. पुनरुक्ति की अशुद्धि।

इस प्रकार ये अशुद्धियाँ भाषा व अर्थ दोनों के सौन्दर्य को हानि पहुँचाती हैं।

1. पदक्रम संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	बच्चे को काटकर फल दो।	बच्चे को फल काटकर दो।
2.	मैंने बहते हुए बालक को देखा।	मैंने बालक को बहते हुए देखा।
3.	यहाँ शुद्ध गाय का घी मिलता है।	यहाँ गाय का शुद्ध घी मिलता है।
4.	कई स्कूल के छात्र ऐसा करते हैं।	स्कूल के कई छात्र ऐसा करते हैं।
5.	राधा के गले में एक मोतियों की माला है।	राधा के गले में मोतियों की एक माला है।
6.	शीतल फलों का रस पीजिए।	फलों का शीतल रस पीजिए।
7.	एक कहानियों की पुस्तक दीजिए।	कहानियों की एक पुस्तक दीजिए।
8.	यहाँ मुफ्त बीमारियों की दवा मिलती है।	यहाँ बीमारियों की दवा मुफ्त मिलती है।

2. अनावश्यक शब्दों के कारण वाक्य अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	मेरे पास केवल मात्र बीस रुपए हैं।	मेरे पास मात्र/केवल बीस रुपए हैं।
2.	कृपया यहाँ बैठने की कृपा करें।	कृपया यहाँ बैठिए।
3.	जल्दी वापस लौटकर आना।	जल्दी लौटकर आना।
4.	क्या यह संभव हो सकता है?	क्या यह संभव है?
5.	जज ने उसे मृत्युदंड की सजा दी।	जज ने उसे मृत्युदण्ड दिया।
6.	मैं प्रातःकाल के समय घूमने जाता हूँ।	मैं प्रातःकाल घूमने जाता हूँ।
7.	शायद आज वे अवश्य आएंगे।	शायद आज वे आएंगे।
8.	ठण्डी बर्फ लाओ।	बर्फ लाओ।
9.	तुम्हारे कपड़े बहुत सुन्दरतम है।	तुम्हारे कपड़े बहुत सुन्दर हैं।
10.	उसने वहाँ से चल दिया।	वह वहाँ से चल दिया।
11.	इन बातों को फिर से दोहराने से क्या लाभ!	इन बातों को दोहराने से क्या लाभ!
12.	अजय का खाना दो।	अजय के लिए खाना दो।

3. लिंग संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	यह नाटक बहुत अच्छी है।	यह नाटक बहुत अच्छा है।
2.	वह महिला विद्वान है।	वह महिला विदुषी है।

3.	महादेवी वर्मा एक प्रसिद्ध कवि थी।	महादेवी वर्मा एक प्रसिद्ध कवयित्री थीं।
4.	शाम के पाँच बजा है।	शाम के पाँच बजे हैं।
5.	मौसी आप क्या कर रहे है?	मौसी आप क्या कर रही हैं?
6.	वह अपने धुन में जा रही है।	वह अपनी धुन में जा रही है।
7.	उसके कोई सन्तान न था।	उसके कोई संतान न थी।
8.	यह चाय बहुत मीठा है।	यह चाय बहुत मीठी है।
9.	मुझे हिन्दी आता है।	मुझे हिन्दी आती है।
10.	सीता बहुत मेहनत करता है।	सीता बहुत मेहनत करती है।

4. वचन संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	आप क्या कर रहा है?	आप क्या कर रहे हो?
2.	अभी पाँच बजा है।	अभी पाँच बजे हैं।
3.	यह बीस रूपया का नोट है।	यह बीस रुपये का नोट है।
4.	उसकी दशा देखकर मेरी आँख में आँसू आ गया।	उसकी दशा देखकर मेरी आँखों में आँसू आ गए।
5.	यह मेरा हस्ताक्षर है।	यह मेरे हस्ताक्षर हैं।
6.	आज मेरा दादाजी आएगा।	आज मेरे दादाजी आएँगे।
7.	आपको कितना फल लेना है?	आपको कितने फल लेने हैं?
8.	मै भगवान का दर्शन करूँगा।	मै भगवान के दर्शन करूँगा।
9.	बीमार का प्राण निकल गया।	बीमार के प्राण निकल गए।
10.	हिमालय पर्वत का राजा है।	हिमालय पर्वतों का राजा है।

5. कारक संबंधी अशुद्धि–

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	मेरे को अभी जाना है।	मुझे अभी जाना है।
2.	वह बाजार में सामान लाने गया है।	वह बाजार से सामान लाने गया है।
3.	बच्चे से गुस्सा मत करो।	बच्चे पर गुस्सा मत करो।
4.	तुम सब छत में खेलों।	तुम सब छत पर खेलो।
5.	पक्षी पेड़ में बैठे है।	पक्षी पेड़ पर बैठे हैं।
6.	वह गुरु के चरणों पर बैठ गया।	वह गुरु के चरणों में बैठ गया।
7.	वह घर में अन्दर है।	वह घर के अन्दर है।
8.	मोहन ने फल लाया।	मोहन फल लाया।
9.	फल को खूब पका होना चाहिए।	फल खूब पका होना चाहिए।
10.	घर पर सब कुशल है।	घर में सब कुशल है।

6. सर्वनाम संबंधी अशुद्धि –

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	मैने काम करना है।	मुझे काम करना है।
2.	अपन सही जगह पर हैं।	हम सही जगह पर हैं।
3.	तुमको क्या लेना है?	आपको क्या लेना है?
4.	मेरे को दस रुपए की जरुरत है।	मुझे दस रुपए की जरुरत है।
5.	अपने को आपका काम ठीक लगा।	मुझे आपका काम ठीक लगा।
6.	वह लोग इधर आएँगे।	वे लोग इधर आएंगे।
7.	भैया ने मुझको कहा।	भैया ने मुझसे कहा।
8.	मेरे को यह नहीं खाना।	मुझे यह नहीं खाना।
9.	तेरे को कहाँ जाना है?	तुम्हें कहाँ जाना है?
10.	तेरे को क्या लेना है?	आपको क्या लेना है?

7. क्रिया संबंधी अशुद्धि –

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	भाषण सुनते सुनते कान पक गया।	भाषण सुनते-सुनते कान पक गए।
2.	आप फल खाके देखो।	आप फल खाकर देखें।
3.	बच्चा खाना व दूध पीकर सो गया।	बच्चा खाना खाकर व दूध पीकर सो गया।
4.	राम ने शीला की प्रतीक्षा देखी।	राम ने शीला की प्रतीक्षा की।
5.	माँ ने पुत्र को आशीर्वाद प्रदान किया।	माँ ने पुत्र को आशीर्वाद दिया।
6.	मैने अपनी नौकरी त्याग दी।	मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी।
7.	राम ने मुझे गाली निकाली।	राम ने मुझे गाली दी।

8. मुहावरे संबंधी अशुद्धि –

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	रमेश की तो अक्ल मर गई है।	रमेश की तो अक्ल मारी गई है।
2.	वह अपनी माँ की आँख का चाँद है।	वह अपनी माँ की आँख का तारा है।
3.	बंद कमरे में उसका दम फूलने लगा।	बंद कमरे में उसका दम घुटने लगा।
4.	उसकी मेहनत पर पानी गिर गया।	उसकी मेहनत पर पानी फिर गया।
5.	तेरी शरारत से मेरी साँस में दम आ गया।	तेरी शरारत से मेरी नाक में दम आ गया।
6.	गीता के मुँह से फूल गिरते हैं।	गीता के मुख से फूल झड़ते हैं।
7.	राम तो अपनी अक्ल का शत्रु है।	राम तो अपनी अक्ल का दुश्मन है।
8.	चोरी करते पकड़े जाने पर उसकी नाक झुक गई।	चोरी करते पकड़े जाने पर उसकी नाक कट गई।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. संयोजक शब्द से जुड़े हुए एक से अधिक साधारण वाक्य को कहते हैं?
(अ) जटिल वाक्य (ब) मिश्र वाक्य
(स) साधारण वाक्य (द) संयुक्त वाक्य [ ]

प्र. 2. वाक्य के मुख्य अंग होते हैं?
(अ) पाँच (ब) दो
(स) चार (द) तीन [ ]

प्र. 3. अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं?
(अ) तीन (ब) पाँच
(स) आठ (द) सात [ ]

प्र. 4. 'अरे! यह क्या हो गया' कौनसा वाक्य है?
(अ) निषेधात्मक (ब) प्रश्नवाचक
(स) आज्ञावाचक (द) विस्मयादिबोधक [ ]

प्र. 5. वाक्य किसे कहते हैं?

प्र. 6. क्रिया के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं?

प्र. 7. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद उदाहरण सहित लिखिए?

प्र. 8. संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं, उदाहरण सहित लिखिए?

प्र. 9. रचना के आधार पर वाक्य के भेद बतलाइए?

प्र.10. 'वाक्य विश्लेषण' को उदाहरण सहित विस्तार से लिखिए?